सफलता की कहानी : हमारे कृषक बंधु श्री यशपाल सिंह

उत्तराखंड के एक किसान, श्री यशपाल सिंह पुत्र श्री पान सिंह, ग्राम माटनयाल–ज्यूला, पोस्ट ऑफिस मनान, जिला अल्मोड़ा के निवासी हैं। श्री यशपाल सिंह दो एकड़ जमीन में जैविक एवं मिश्रित खेती करते हैं। इनके पास मछली पालन के दो तालाब और दो साहीवाल गायें भी हैं।

बरसात में सब्जियाँ जैसे– शिमला मिर्च, भिंडी, बीन्स, बैंगन, टमाटर, लौकी, देशी खीरा, देशी कद्दू, आदि की फसल उगा लेते हैं। इसके साथ–साथ मडुआ, मादिरा, काला भट्ट, उरद, सोयाबीन, और गहत की खेती से रु.10,000 से 12,000 तक कमा लेते हैं और अपने खाने लायक धान की खेती भी कर लेते हैं।

श्री यशपाल सिंह जी जाड़ों में मटर, फूल गोभी, बंद गोभी, दूनागिरी मूली, हरा व मसाले वाला धनिया, गडेरी, लाही, पालक, लहसुन व मेथी भी उगाते हैं। इसके अतिरिक्त श्री यशपाल जी अपने खाने लायक गेहूँ, मसूर की दाल और जौ की भी खेती कर लेते हैं।

हिन्दुस्तान

अल्मोड़ा और बागेश्वर जनपद के चार किसानों को किया गया कृषि कर्मठ पुरस्कार से सम्मानित

मीना और यशपाल को कर्मठ पुरस्कार

किसान सम्मान

अल्मोड़ा | संवाददाता

पहाड़ में खेती बाड़ी के प्रति लोगों की रुचि लगातार कम हो रही है। जंगली जानवर और बंदरों के आतंक से लोगों को इससे मोह कम हो रहा है, लेकिन कुछ लोग विपरीत परिस्थिति में भी खेती को न केवल आजीविका का साधन बना रहे हैं, बल्कि दूसरों के लिए भी आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं। जिले के ऐसे ही दो काश्तकारों का प्रदेश सरकार ने कृषि कर्मठ पुरस्कार के तहत चयन किया है। इनमें हवालबाग ब्लॉक के ज्यूला ग्वालाकोट निवासी यशपाल सिंह और ताकुला के भकूना गांव निवासी मीना बिष्ट शामिल है।

दो लोगों को दिया रोजगार : हवालबाग के ज्यूला ग्वालाकोट निवासी यशपाल सिंह भी सम्मान के लिए चयनित हुए हैं। वह जहां कृषि से स्वरोजगार कर रहे हैं। वहीं उन्होंने गांव में ही अन्य दो लोगों को रोजगार दिया है। उन्होंने बताया कि कृषि समेत मत्स्य और दुग्ध उत्पादन कर रहे हैं। इससे पॉली हाउस में सब्जी उत्पादन का भी काम करते हैं। उन्होंने कहा कि मेहनत से इस मुकाम पर पहुंच कर काफी खुशी हो रही हैं। कहा कि बंदरों को भगाने के लिए एयर गन का प्रयोग करते हैं, जंगली सुअरों से खेती को बचाने के लिए खेतों में टीन लगाया है।

सम्मानित ताकुला की काश्तकार मीना बिष्ट।

सम्मानित हवालबाग के किसान यशपाल सिंह। • हिन्दुस्तान

पहाड़ी उत्पादों को बढ़ावा देने का करती है काम

ताकुला ब्लॉक के भकूना गांव निवासी महिला काश्तकार मीना बिष्ट का खेती को लेकर विशेष काम है। वह पहाड़ी उत्पादों को बढ़ावा देने का काम करती है। बताया कि भट्ट, गहत, सरसों, ज्वार, मसूर, चना, गेहूं, आदि का उत्पादन करते हैं। बताया कि खेती बाड़ी को ही स्वरोजगार से जोड़ लिया। पुरस्कार के लिए चयनित होने पर उन्हें खुशी हो रही है। मीना कहती हैं कि लोगों को भी खेती से जुड़ना चाहिए। कहा कि बंदरों के आतंक और अन्य विपरीत हालात का सामना कर खेती को फायदेमंद साबित किया जा सकता है।

बागेश्वर के राजेश और कमला भी पुरस्कृत

बागेश्वर | संवाददाता

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना के तहत लघु सीमांत कृषकों के चार बच्चों को प्रोत्साहन राशि दी गई। इसमें वह बच्चे शामिल हैं, जिन्होंने बोर्ड परीक्षा में अव्वल स्थान पाया है। हाईस्कूल में नंबर पाने वाले को पांच तथा इंटर के छात्रों को आठ हजार रुपये की धनराशि का चेक दिया गया।

अलावा दो किसानों को कृषि कर्मठ पुरस्कार से नवाजा गया। इन्होंने अपनी मेहनत के बल पर खुद को आत्मनिर्भर बनाने का काम किया है। इन्हें 15 हजार रुपये की धनराशि का चेक दिया गया। मालूम हो कि सरकार किसानों की आय दोगुनी करने की बात कर रही है। इसी के साथ ही बेहतर काम करने वाले किसानों को तथा उनके मेधावी बच्चों को पुरस्कृत कर रही है। कृषि कर्मठ पुरस्कार के लिए राजेश कुमार पुत्र गिरीश चंद्र निवासी छाती तथा कमला साह पत्नी मथुरा लाल मन्युड़ा को को यह पुरस्कार दिया गया है। उन्हें 15-15 हजार रुपये की राशि का चेक दिया गया। इन किसानों ने सरकार की मंशा के अनुरूप खुद को आत्मनिर्भर बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई और खुद को मुख्य धारा में जोड़ा है। इसके अलावा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत हाईस्कूल में 87.40 प्रतिशत अंक लाने वाली राइंका रवाईखाल की तनुजा तिवारी पुत्री घनश्याम तिवारी तथा 94 प्रतिशत अंक लाने वाले नरेंद्र सिंह पुत्र चंचल सिंह जीआईसी बागेश्वर को चेक देकर सम्मानित किया गया।

इसी तर्ज पर इंटर कॉलेज रवाईखाल के सुमित पांडेय पुत्र बंशीधर पांडेय तथा इंटर कॉलेज तुपेड़ की बबली खेतवाल पुत्री प्रकाश खेतवाल को सम्मानित किया गया।

देहरादून में बागेश्वर के छात्रों को चेक देते अतिथि।

इनको सबसे अच्छा लाभ मछली पालन, सब्जी की खेती व दूध उत्पादन से होता है। श्री यशपालजी के पास 8.5 X 4.5 x 1 मीटर ^{3} के दो छोटे तालाब हैं। इन तालाबों में वह मछली पालकर रू. 40,000 कमा लेते हैं। मछली के तालाब का पानी सब्जियों व फलों की सिंचाई हेतु उपयोग में लाया जाता है। इस प्राकृतिक उर्वरक युक्त पानी से सिंचाई करने पर सब्जियों का अच्छा उत्पादन प्राप्त होता है और कृत्रिम उर्वरकों का उपयोग नही करना पड़ता।

इनके अनुसार मछली से रु 40,000 शिमला मिर्च से रु 15,000 टमाटर से रु 10,000 बीन्स से रु 2,000 कद्दू से रु 10,000 बैंगन से रु 2,000 देशी खीरे से रु 10,000 मटर से रु 10,000 दूध से रु 12,000 दूनागिरि मूली से रु 2,000 भिंडी से रु 5,000 तक मुनाफा कमा लेते हैं। इनको एक साल में लगभग 1,30,000 से 1,35,000 तक का मुनाफा प्राप्त हो जाता है। श्री यशपाल सिंहजी की उम्र 55 साल है और इन्होंने खेती के अलावा कभी किसी प्रकार का अन्य काम अथवा नौकरी नहीं की है। अपने कठोर परिश्रम से इन्होंने अपने परिवार का पालन–पोषण किया और आज इनका एक पुत्र BSF में इंस्पेक्टर के पद पर रहकर देश की सेवा कर रहा है तो दूसरे पुत्र ने वाणिज्य में परास्नातक किया है और वह इनके साथ खेती में इनकी मदद करता है। सबसे छोटा बेटा इंजीनियरिंग की शिक्षा ले रहा है।

आपके अथक परिश्रम से प्रभवित हो कर कुछ दिन पूर्व उत्तराखंड राज्य सरकार ने आपको एक ''कर्मठ किसान'' के रूप में चिन्हित किया है। आपकी इस उपलब्धि पर आपको भा कृ प अनु परि–शीतजल मात्स्यिकी अनुसन्धान निदेशालय भीमताल परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाइयाँ।

आज के युवाओं के लिए श्री यशपाल सिंह जी एक ऐसे उदारहण हैं जिन्होंने खेती और अपनी कठोर परिश्रम से अपनी पहचान बनाई। उम्मीद है की इनकी यह लघु कथा हमारे युवाओं को खेती अपनाने के लिए अवश्य प्रेरणा देगी।